खलीफा हारून अलरशीद के कारनामे

# जागते या सोते हुए?



वैल बिरो

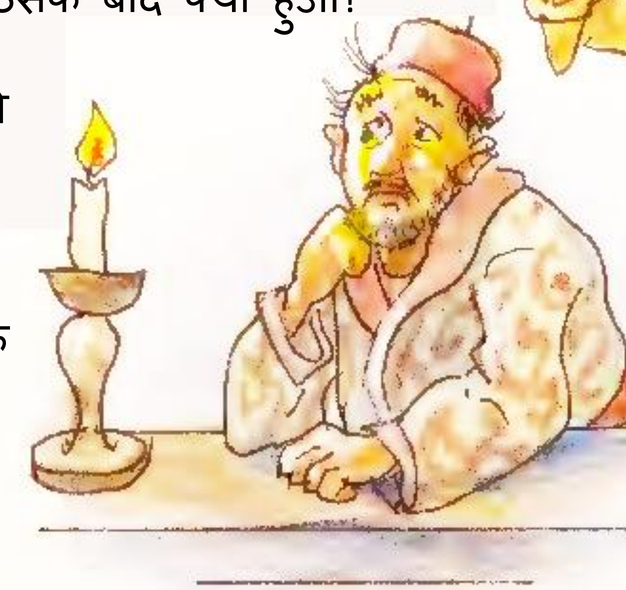


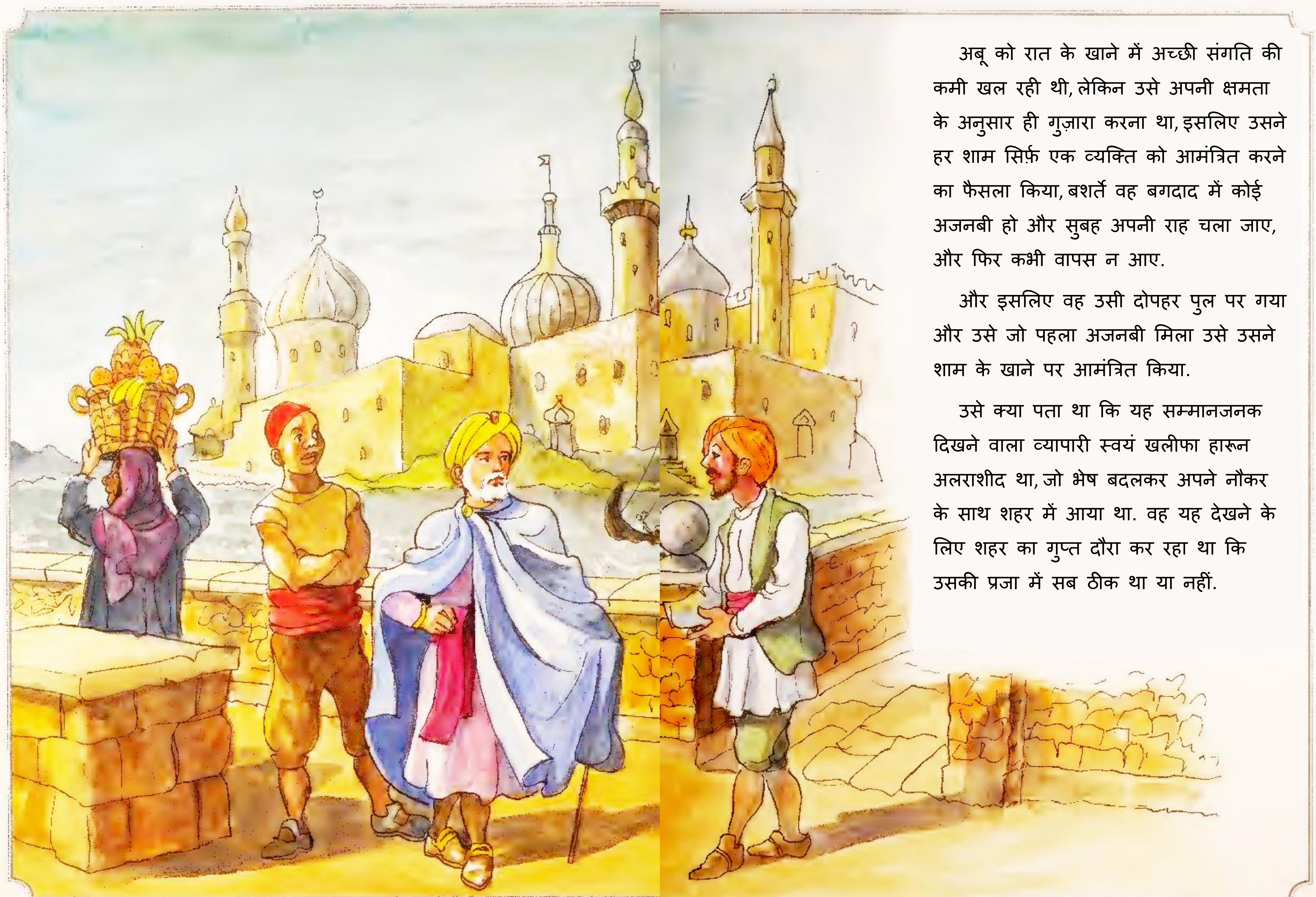
खलीफा हारून अलरशीद के शासनकाल में बगदाद में अबू हसन नाम का एक युवक रहता था. वह एक खुशमिजाज और नेकदिल इंसान था, जिसे अपने दोस्तों की संगति बहुत पसंद थी और वह हर रात शानदार खाने, मधुर संगीत और बातचीत से उनका मनोरंजन करता था.



यह सब कुछ समय तक चलता रहा. अंत में उसके पास पैसे खत्म हो गए और अब वह इतनी फिजूलखर्ची वाली पार्टियाँ आयोजित नहीं कर सकता था. आपको क्या लगता है, उसके बाद क्या हुआ?

उसके बाद से अबू के सभी दोस्तों ने उससे मिलना बंद कर दिया और वास्तव में, उन्होंने उसे अब एक दोस्त के रूप में जानने से भी इनकार कर दिया. उससे अबू बहुत निराश हुआ.





अबू को रात के खाने में अच्छी संगति की कमी खल रही थी, लेकिन उसे अपनी क्षमता के अनुसार ही गुज़ारा करना था, इसलिए उसने हर शाम सिर्फ़ एक व्यक्ति को आमंत्रित करने का फैसला किया, बशर्ते वह बगदाद में कोई अजनबी हो और सुबह अपनी राह चला जाए, और फिर कभी वापस न आए.

और इसलिए वह उसी दोपहर पुल पर गया और उसे जो पहला अजनबी मिला उसे उसने शाम के खाने पर आमंत्रित किया.

उसे क्या पता था कि यह सम्मानजनक दिखने वाला व्यापारी स्वयं खलीफा हारून अलराशीद था, जो भेष बदलकर अपने नौकर के साथ शहर में आया था. वह यह देखने के लिए शहर का गुप्त दौरा कर रहा था कि उसकी प्रजा में सब ठीक था या नहीं.

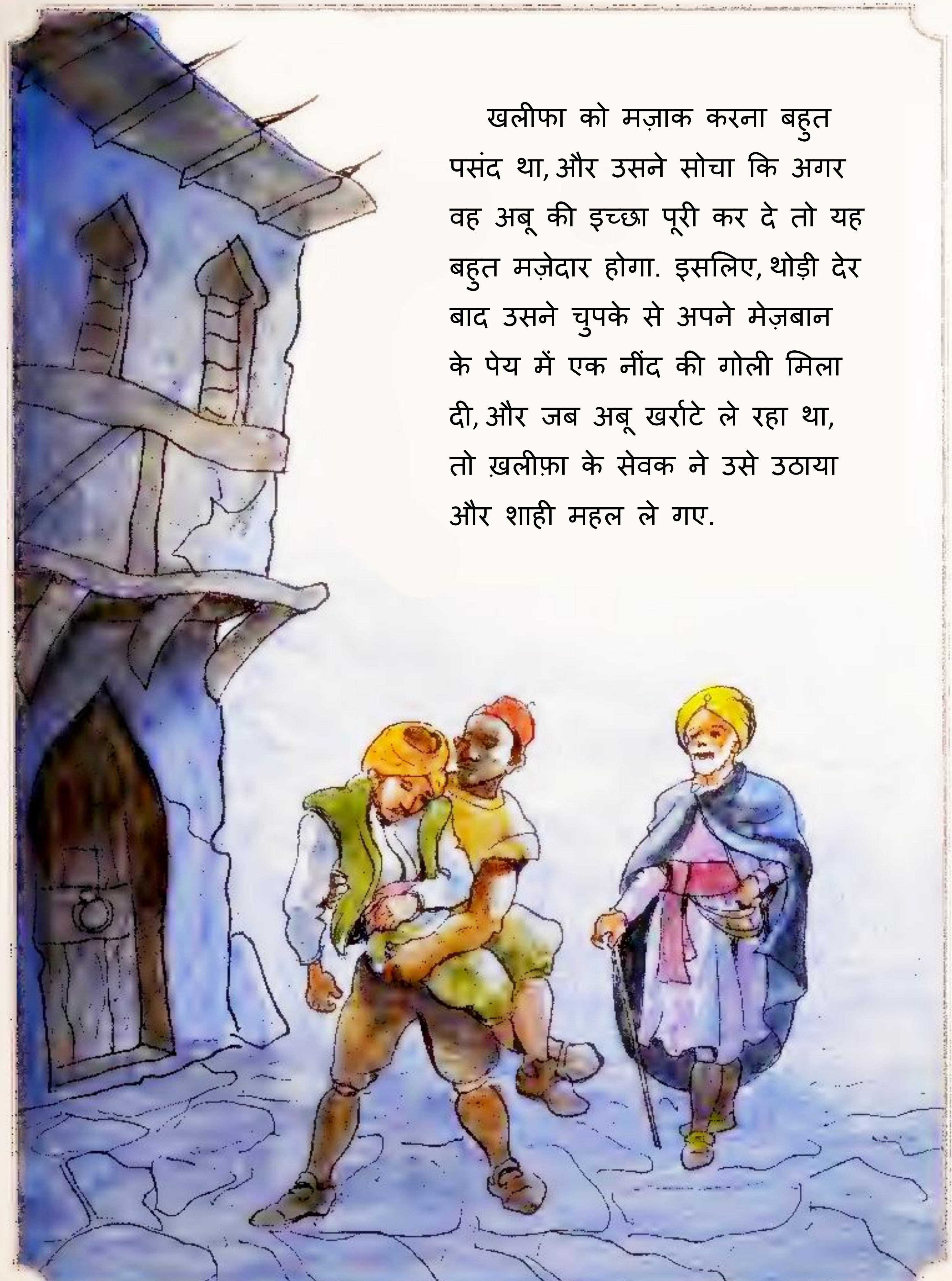
व्यापारी ने अबू का निमंत्रण स्वीकार कर लिया, क्योंकि वह स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु था, और उन्होंने अबू की माँ द्वारा तैयार किए गए स्वादिष्ट रात्रिभोज का आनंद लिया.



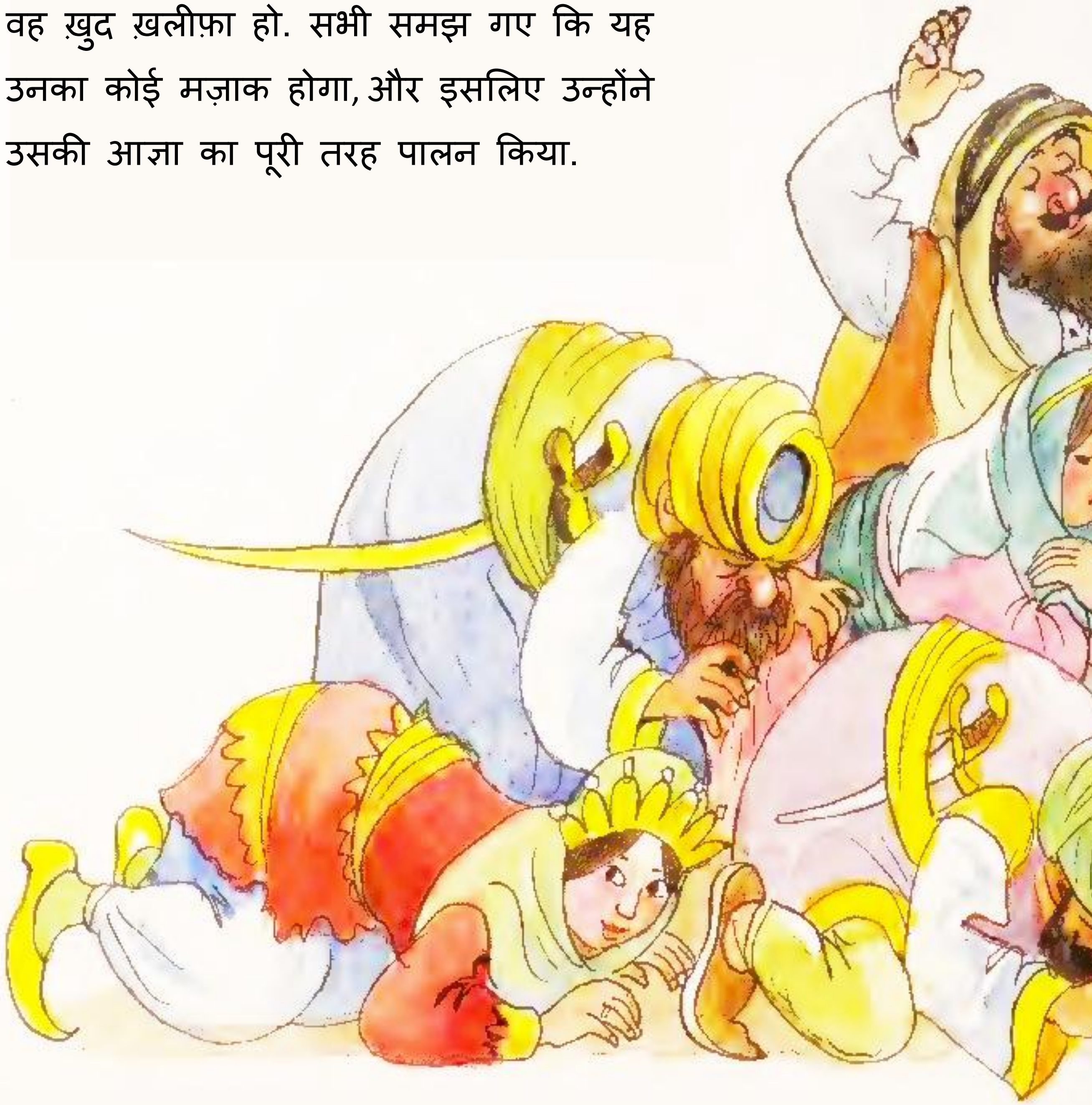
भोजन के बाद बातचीत करते हुए, अबू ने कहा, "मेरी इच्छा है, महोदय, कि काश मैं एक दिन के लिए खलीफा बन पाता, ताकि मैं यहाँ उन बूढ़ों के समूह को सजा दे पाता जो मेरे और मेरे पड़ोसियों के बारे में झूठी और निर्दयी अफवाहें फैलाते हैं. तब मैं उन्हें ज़रूर सबक सिखाता!"



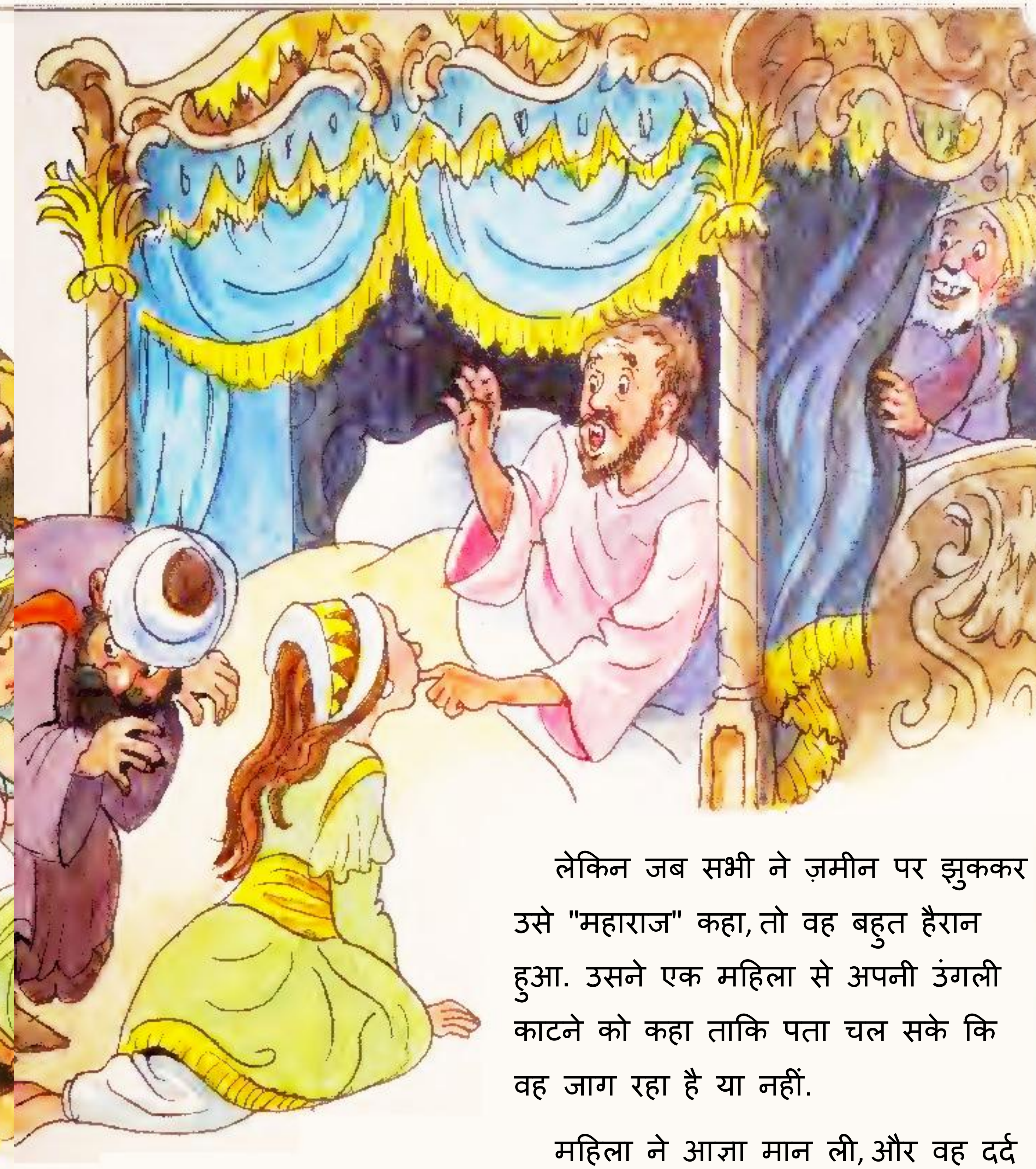
खलीफा को मज़ाक करना बहुत पसंद था, और उसने सोचा कि अगर वह अबू की इच्छा पूरी कर दे तो यह बहुत मज़ेदार होगा. इसलिए, थोड़ी देर बाद उसने चुपके से अपने मेज़बान के पेय में एक नींद की गोली मिला दी, और जब अबू खर्राटे ले रहा था, तो ख़लीफ़ा के सेवक ने उसे उठाया और शाही महल ले गए.



वहाँ उसे ख़लीफ़ा के शयनकक्ष में ले जाया गया और रात भर के लिए शानदार बिस्तर पर लिटा दिया गया. फिर ख़लीफ़ा ने पूरे दरबार को आदेश दिया कि वे अबू के साथ ऐसा व्यवहार करे जैसे वह ख़ुद ख़लीफ़ा हो. सभी समझ गए कि यह उनका कोई मज़ाक होगा, और इसलिए उन्होंने उसकी आज्ञा का पूरी तरह पालन किया.

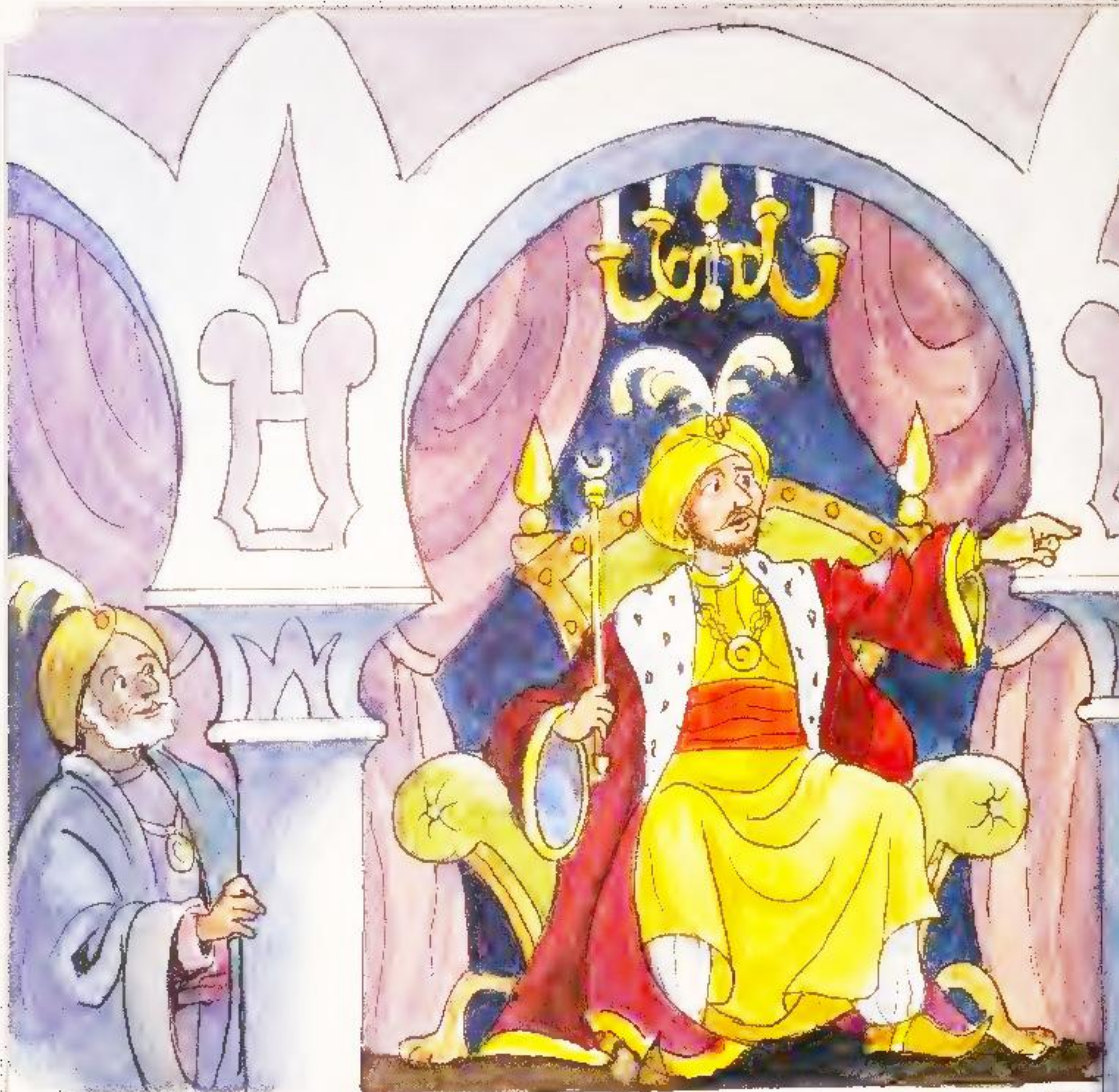


सुबह जब अबू उठा, तो खुद को एक आलीशान कमरे में पाकर वह दंग रह गया और सोचने लगा कि वह अभी भी सो रहा था या फिर सपना देख रहा था.



लेकिन जब सभी ने ज़मीन पर झुककर उसे "महाराज" कहा, तो वह बहुत हैरान हुआ. उसने एक महिला से अपनी उंगली काटने को कहा ताकि पता चल सके कि वह जाग रहा है या नहीं.

महिला ने आज्ञा मान ली, और वह दर्द से चिल्ला उठा. आख़िरकार वह ज़रूर जाग रहा होगा! असली खलीफा, जो पर्दे के पीछे छिपा था, लगभग ज़ोर से हँस पड़ा.



अब खलीफा के सबसे अच्छे कपड़े पहने अबू के लिए दैनिक परिषद में उपस्थित होने का समय हो गया था. वह खलीफा के सिंहासन पर बैठा था जब अधिकारी राज्य के मामलों की रिपोर्ट देने आए. एक खम्बे के पीछे छिपा असली खलीफा, अबू के गरिमामय व्यवहार से बहुत प्रभावित हुआ क्योंकि अब उसने मान लिया था कि वही वास्तव में खलीफा था.

मुख्य वज़ीर अभी भाषण शुरू ही कर रहा था कि अबू ने अधिकारियों में पुलिस प्रमुख को पहचाना और उसे याद आया कि उसने पिछली रात 'व्यापारी' से क्या कहा था.



"रुको!" अबू ने आदेश दिया. "मेरे पास पुलिस प्रमुख के लिए एक महत्वपूर्ण आदेश है. कृपया आगे आओ."

"प्रमुख," खलीफा अबू ने आदेश दिया, "दूसरे ज़िले के सभा भवन में जाओ और वहाँ नियमित रूप से आने वाले चार बूढ़ों को गिरफ्तार करो." फिर उन्हें गधों पर पीछे की ओर मुँह करके बिठाकर मुख्य सड़कों पर घुमाओ और नगर-प्रचारक से कहलवाओ कि दूसरों के बारे में झूठी अफ़वाहें फैलाने वालों के लिए यही सज़ा है."



"फिर, वे ज़िला छोड़ दें और कभी वापस न आएँ."

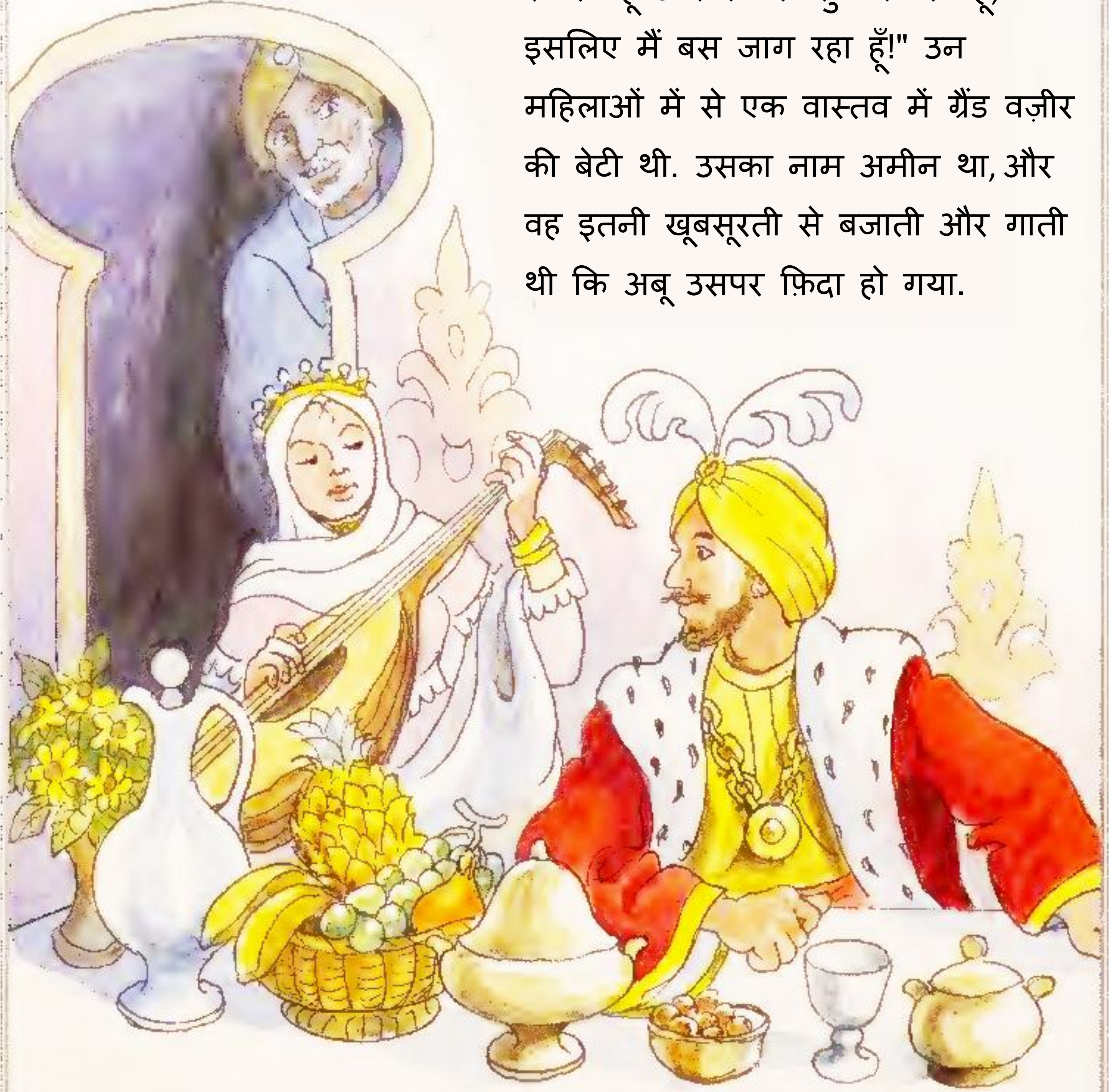
अबू ने उच्च कोषाध्यक्ष की ओर मुड़कर उसे निम्नलिखित आदेश दिए: "उसी ज़िले में अबू हसन के घर जाओ और उसकी माँ को एक हज़ार सोने के सिक्कों का एक थैला दो. उनसे कहो कि यह खलीफा की ओर से एक उपहार है, क्योंकि वह अपने अयोग्य बेटे की इतनी प्यारी माँ है."



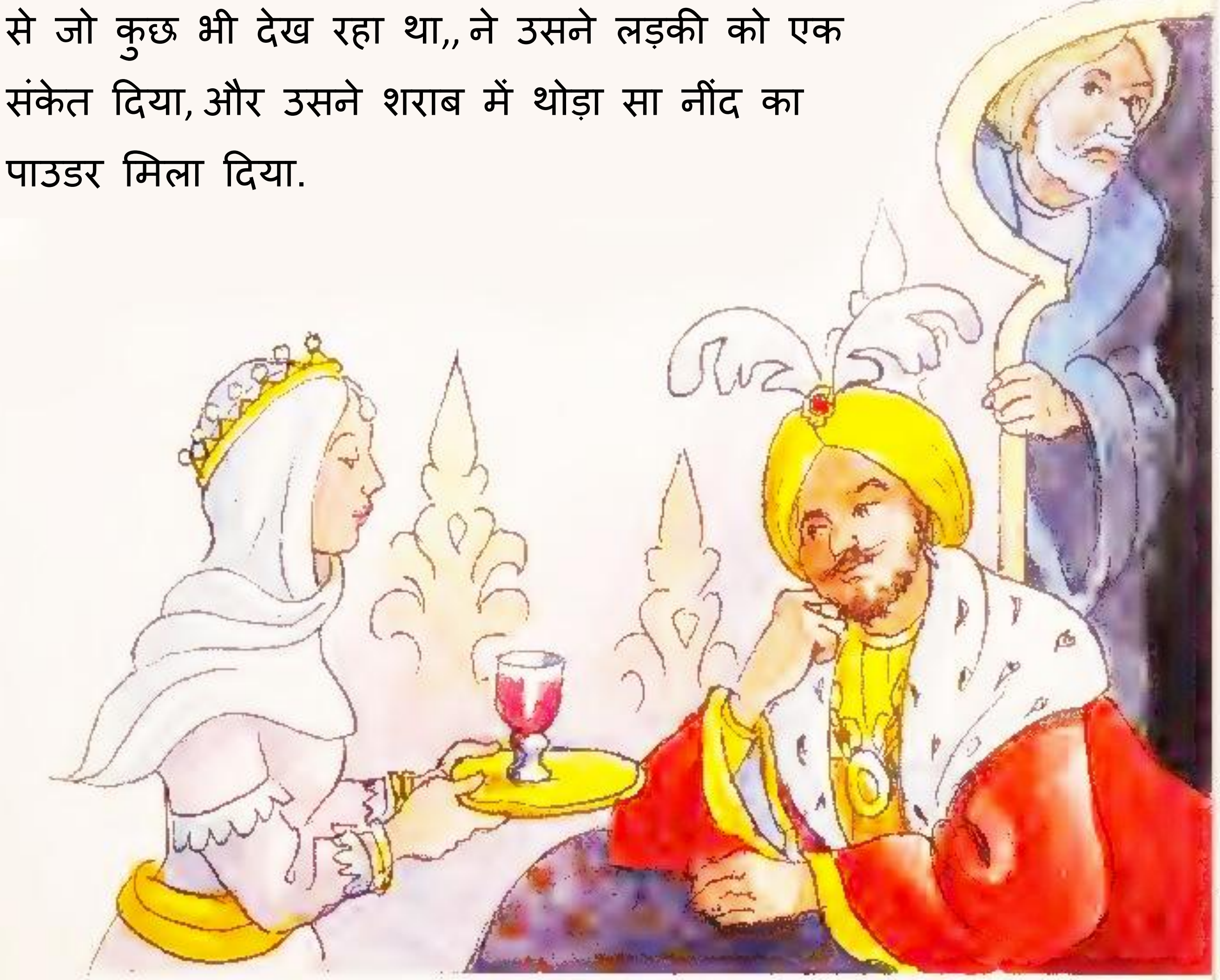
इन आदेशों का तुरंत पालन किया गया, जिससे असली खलीफा को बहुत मज़ा आया.

जब आखिरकार परिषद समाप्त हुई, तो खलीफा अबू के सामने एक शानदार भोजन लाया गया, जिसे सुंदर युवतियों ने परोसा.

"ज़रूर मैं अभी भी सो रहा हूँगा," उसने सोचा, "लेकिन मैं भोजन का स्वाद ले सकता हूँ और संगीत सुन सकता हूँ, इसलिए मैं बस जाग रहा हूँ!" उन महिलाओं में से एक वास्तव में ग्रैंड वज़ीर की बेटी थी. उसका नाम अमीन था, और वह इतनी खूबसूरती से बजाती और गाती थी कि अबू उसपर फ़िदा हो गया.



जब संगीत समाप्त हुआ, तो अबू ने उससे एक गिलास शराब लाने की विनती की ताकि वह उसकी प्रतिभा और सुंदरता की तारीफ़ कर सके. जब वह उसे लेने गई, तो असली खलीफा, जो अपने छिपने के स्थान से जो कुछ भी देख रहा था,, ने उसने लड़की को एक संकेत दिया, और उसने शराब में थोड़ा सा नींद का पाउडर मिला दिया.



अबू ने उसे पी लिया और अमीन से अपने प्यार का इज़हार करने ही वाला था कि वह फिर से गहरी नींद में सो गया.

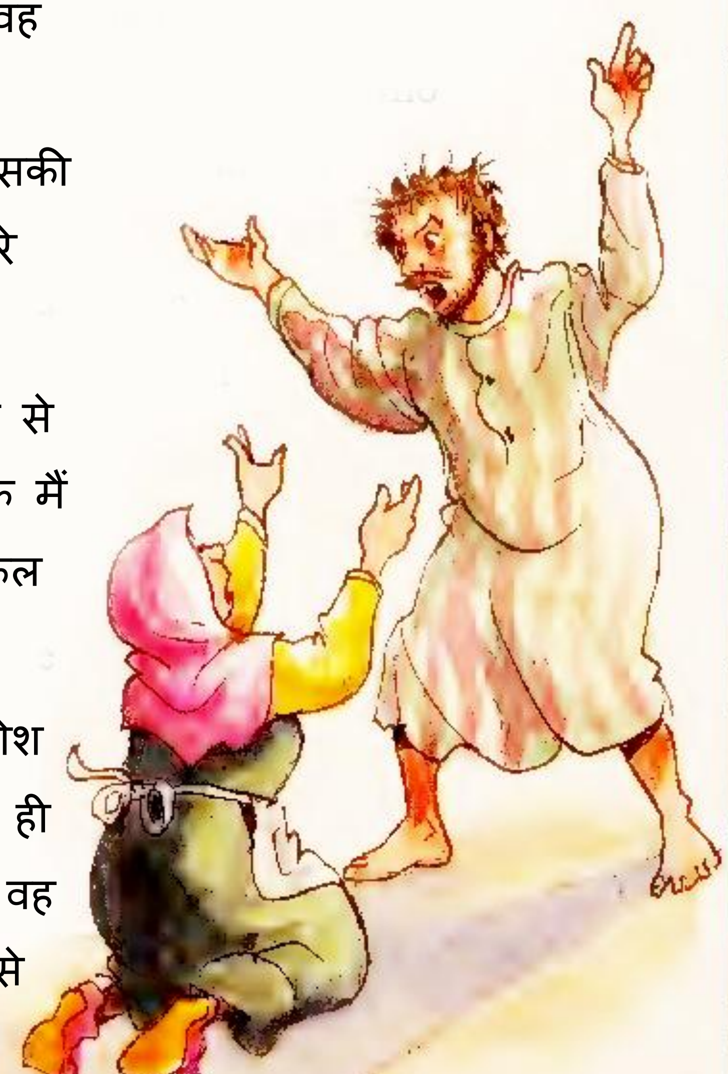
असली खलीफा छाया से बाहर आया और आदेश दिया कि अबू को उसके अपने कपड़े पहनाए जाएँ और उसके घर वापस ले जाया जाए.



अगली सुबह जब अबू अपने बिस्तर पर उठा, तो उसे यकीन हो गया कि वह अभी भी खलीफा है. इसलिए उसने अमीन को बुलाया, लेकिन बदले में उसकी माँ अंदर आई. "तुम्हें क्या हुआ है, मेरे बेटे?" उसने पूछा,

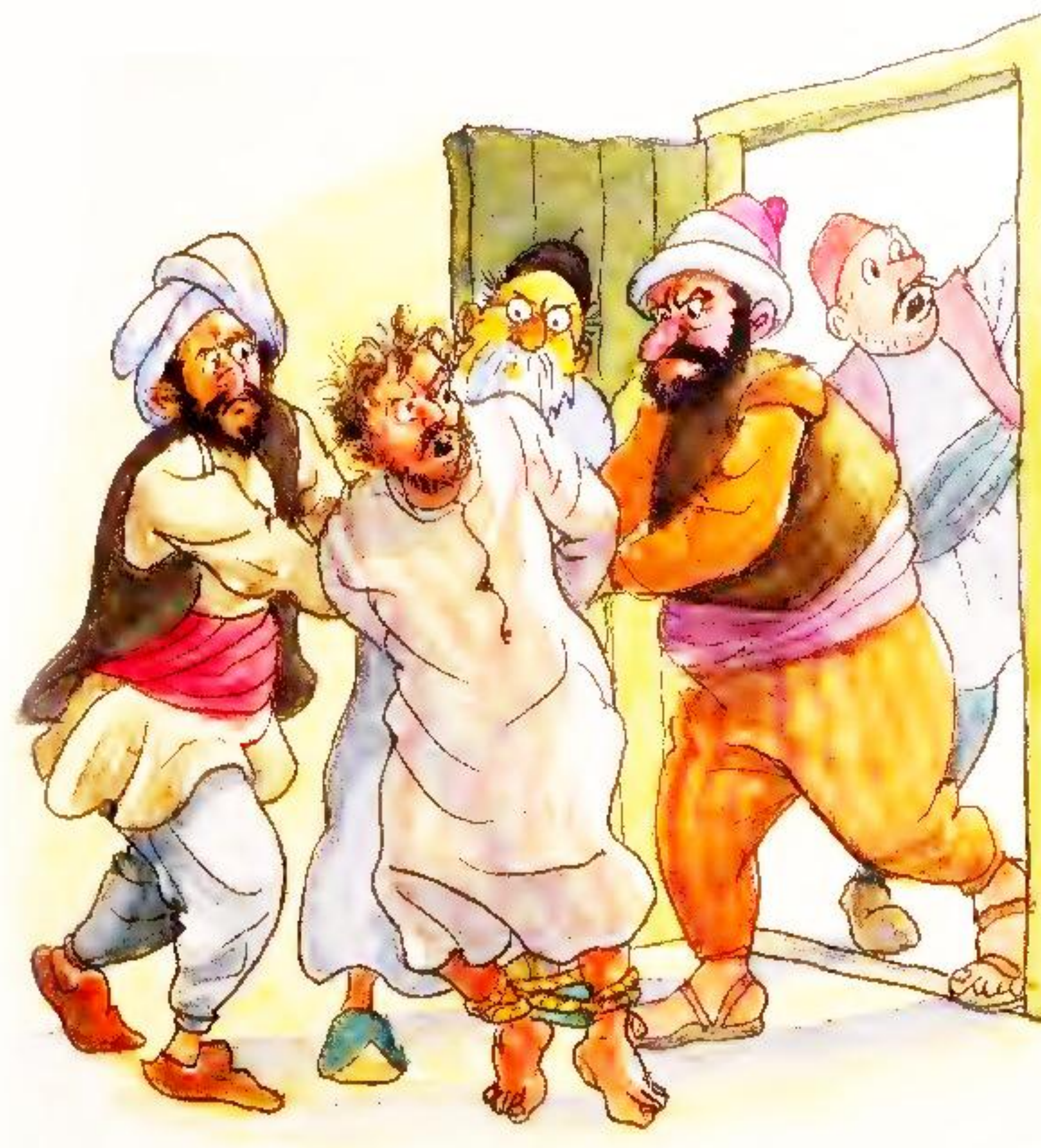
"बेटा, अच्छी औरत?" अबू ने गुस्से से जवाब दिया. "क्या तुम्हें नहीं पता कि मैं खलीफा हूँ? मेरे आदेश पर ही तुम्हें कल वह पैसे मिले थे!"

उसकी माँ जितना ज़्यादा उससे होश में आने की विनती करती, अबू उतना ही ज़्यादा गुस्सा होता जाता, आखिरकार वह अपना आपा खो बैठा और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा.





हंगामा सुनकर पड़ोसी दौड़े-दौड़े आए यह देखने के लिए कि माजरा क्या है. जब अबू लगातार इस बात पर अड़ा रहा कि वह कोई और नहीं बल्कि खलीफा है, तो उन्होंने मान लिया कि वह पागल हो गया है.



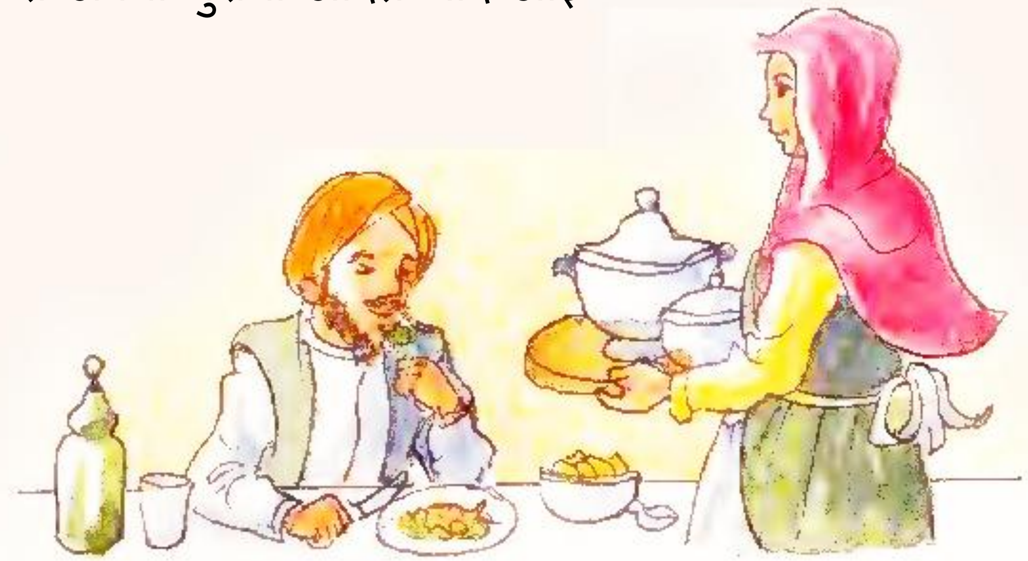
सबने एकमत होकर कहा कि उसे पागलखाने में डॉक्टर के पास ले जाने के अलावा कोई चारा नहीं है.



जब अबू ने पागलखाने से भागने की कोशिश की, तो डॉक्टरों ने उसे तब तक सलाखों के पीछे डाल दिया जब तक वह ठीक न हो जाए.

उसकी माँ रोज़ मिलने आती, और धीरे-धीरे अबू को एहसास हुआ कि वह शायद सपना देख रहा था. इसलिए जब वह होश में आया तो उसने विनम्रतापूर्वक माँ से माफ़ी मांगी.

अब जब अबू ठीक हो गया था, तो उसकी माँ उसे घर ले गई. उसे पूरी तरह स्वस्थ करने के लिए उसकी पूरी देखभाल की और उसे अच्छा खाना खिलाया, लेकिन आखिरकार अबू फिर से अपनी पुरानी आदत याद आई.



और इस तरह अबू बगदाद पुल पर लौट आया. संयोग से, वह खलीफा की मासिक यात्रा का दिन भी था, और अबू को फिर से देखकर वह खुश हुआ, जो अब काफी स्वस्थ दिख रहा था. लेकिन अबू ने उस "व्यापारी" को पहचान लिया जो उसकी परेशानियों की शुरुआत में वहाँ मौजूद था, और उसने मुँह मोड़ लिया.

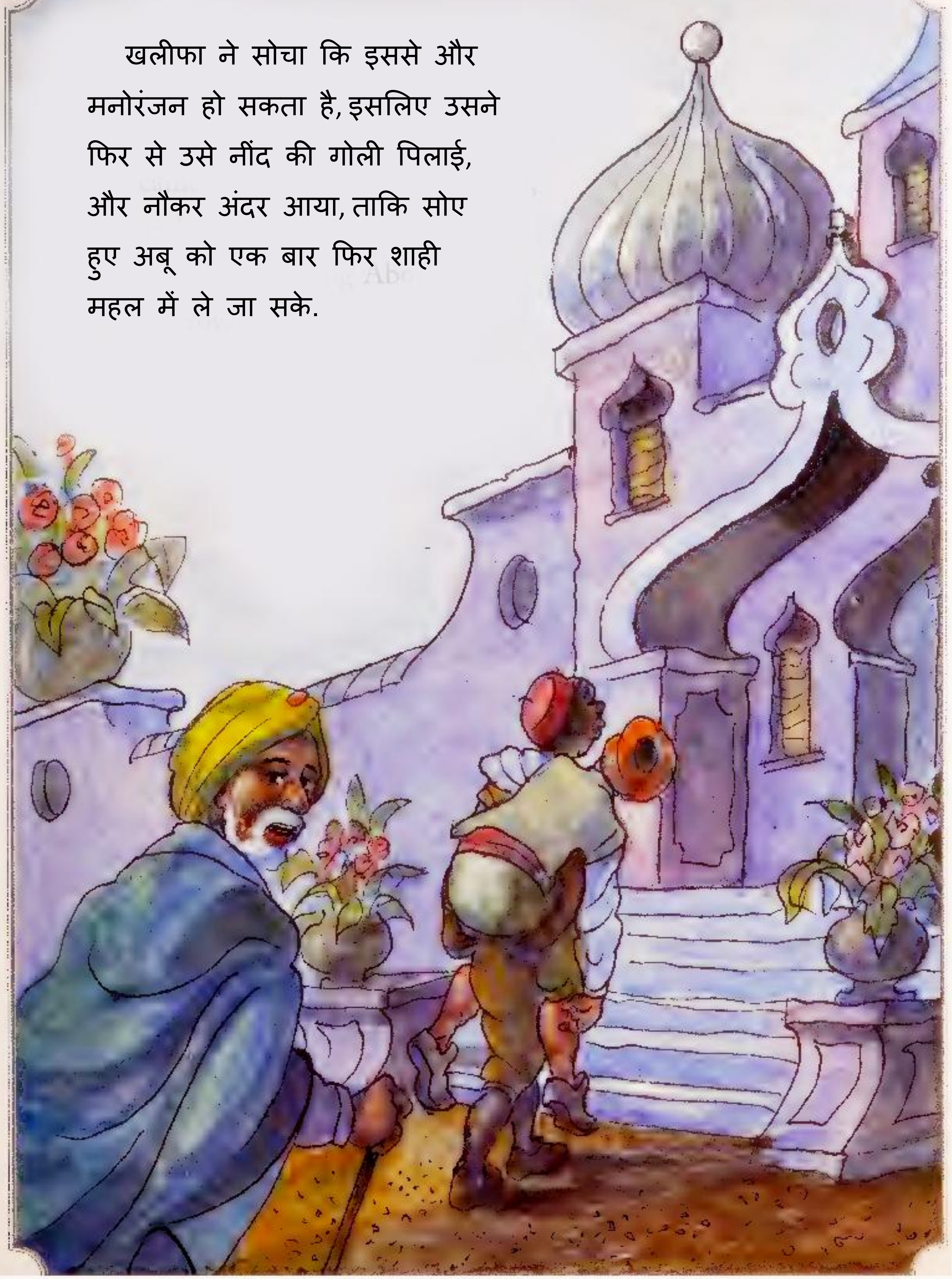


"क्या मैंने तुम्हें नाराज़ किया है, भाई?" भेष बदले हुए खलीफा ने पूछा, क्योंकि वह सचमुच चिंतित था. आखिरकार अबू ने उसकी बात मान ली और अपनी कहानी सुनाई. खलीफा को उस पर तरस आ गया. "अगर सचमुच यही मेरी गलती थी, तो मैं तुम्हें भरपूर मुआवज़ा दूँगा," उसने कहा. फिर अबू ने उसे फिर से रात के खाने पर आमंत्रित किया.

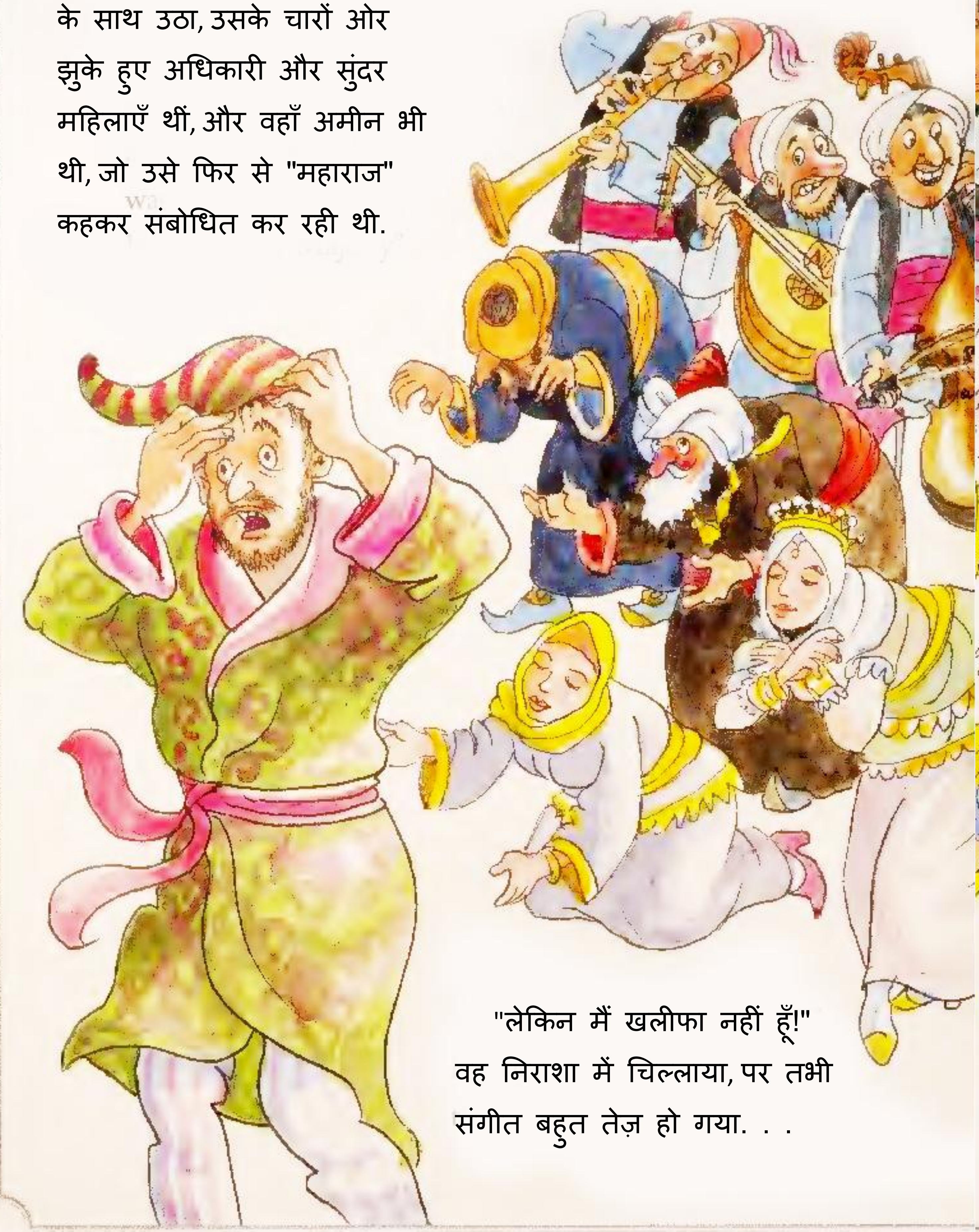


भोजन के बाद बातचीत के दौरान, अबू ने बताया कि कैसे उसने कल्पना की थी कि वह एक विशाल महल में है, और वहाँ उसे सुंदर अमीन से प्यार हो गया था. लेकिन अब वह जानता था कि, दुर्भाग्य से, यह सिर्फ़ एक सपना था.

खलीफा ने सोचा कि इससे और मनोरंजन हो सकता है, इसलिए उसने फिर से उसे नींद की गोली पिलाई, और नौकर अंदर आया, ताकि सोए हुए अबू को एक बार फिर शाही महल में ले जा सके.

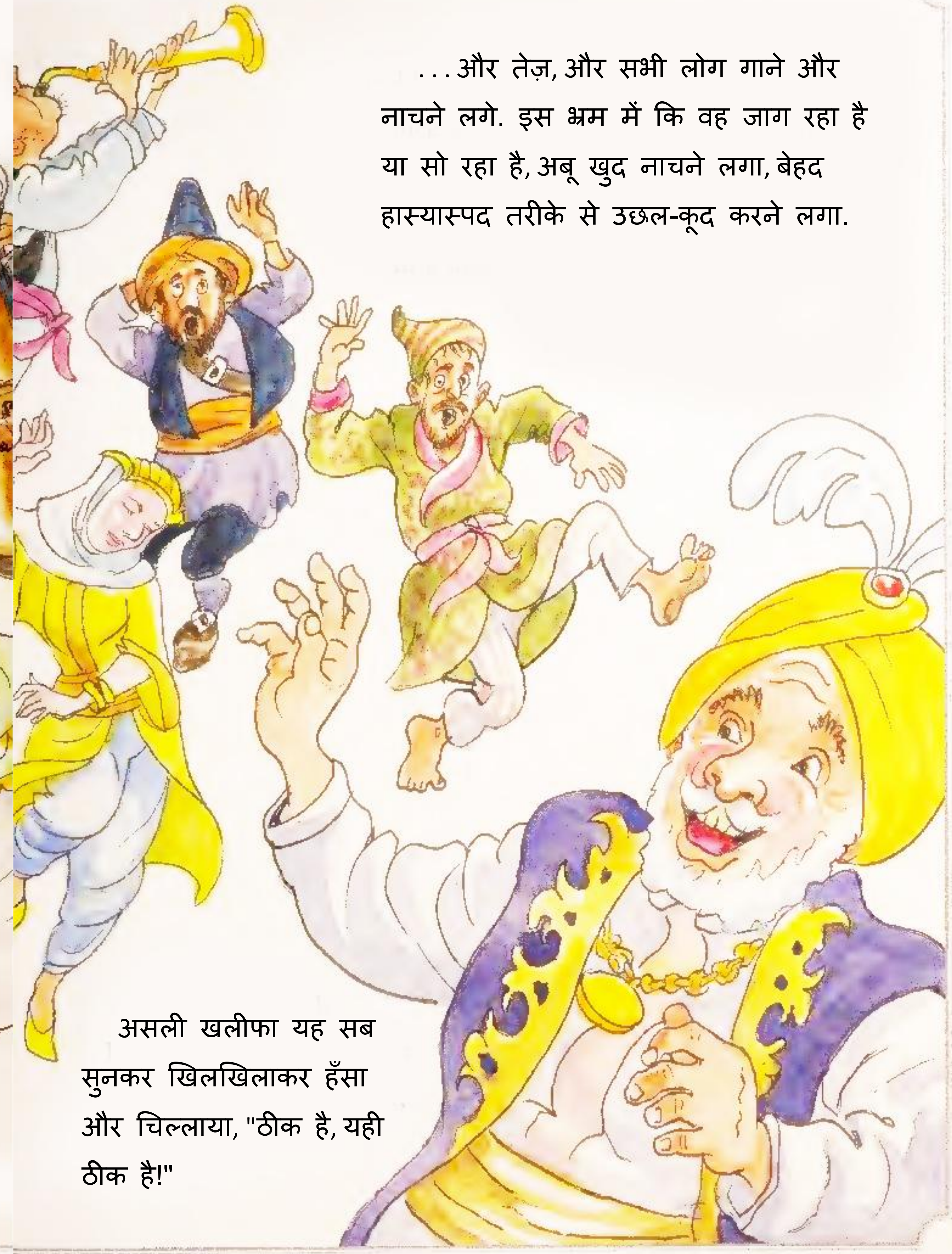


अगली सुबह अबू मधुर संगीत के साथ उठा, उसके चारों ओर झुके हुए अधिकारी और सुंदर महिलाएँ थीं, और वहाँ अमीन भी थी, जो उसे फिर से "महाराज" कहकर संबोधित कर रही थी.



"लेकिन मैं खलीफा नहीं हूँ!" वह निराशा में चिल्लाया, पर तभी संगीत बहुत तेज़ हो गया. . .

. . . और तेज़, और सभी लोग गाने और नाचने लगे. इस भ्रम में कि वह जाग रहा है या सो रहा है, अबू खुद नाचने लगा, बेहद हास्यास्पद तरीके से उछल-कूद करने लगा.



असली खलीफा यह सब सुनकर खिलखिलाकर हँसा और चिल्लाया, "ठीक है, यही ठीक है!"

और इस तरह खलीफा ने अबू को सब कुछ बता दिया. अबू को खुद एहसास हुआ कि जब वह एक दिन के लिए खलीफा बना था, तब वह सचमुच जाग रहा था और—सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि—अमीन असली थी और उससे शादी करने को तैयार थी.

"महाराज," उसने कहा, "आपके द्वारा दिए गए मुआवजे के प्रस्ताव के बजाय, मैं अपनी सगाई पर केवल आपका आशीर्वाद चाहूँगा."

खलीफा मान गया और अमीन के पिता को सगाई देखने के लिए बुलाया. और आप निश्चिंत रह सकते हैं कि खलीफा ने शादी में बेहद उदार तोहफे दिए.



समाप्त